ब्रेक्जिट, स्कॉटलैंड और बोरिस जॉनसन के ब्रिटेन के लिए चुनाव परिणाम क्या मायने रखता है

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

16 दिसम्बर, 2019

जॉनसन की कंजर्वेटिव पार्टी ने 650 सदस्यीय संसद में 365 सीटें जीतीं। लेबर पार्टी ने 203 और स्कॉटिश नेशनल पार्टी ने 48 जीतीं।

पिछले सप्ताह, ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने चुनाव में बड़ी जीत दर्ज की, जिसके बाद कई महत्त्वपूर्ण घटक सामने देखने को मिले, जिसमें से सबसे महत्त्वपूर्ण ब्रेक्जिट के सफल होने की संभावना है। अन्य महत्त्वपूर्ण घटकों में 1935 के बाद से लेबर पार्टी की सबसे बड़ी हार, लेबर पार्टी के नेता जेरेमी कॉर्बिन द्वारा भविष्य के चुनावों में पार्टी का नेतृत्व नहीं करने का फैसला, स्कॉटिश नेशनल पार्टी द्वारा स्कॉटलैंड की सीटों पर विजय और स्वतंत्रता की संभावना पर इसके निहितार्थ शामिल हैं।

जॉनसन की कंजर्वेटिव पार्टी ने 650 सदस्यीय संसद में 365 सीटें जीतीं। लेबर पार्टी ने 203, और स्कॉटिश नेशनल पार्टी ने 48 जीतीं।

ब्रेक्जिट

क्या है?

- यह मुख्यत: दो शब्दों ब्रिटेन (Britain) और एग्जिट (Exit) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ ब्रिटेन का यूरोपीय संघ (European Union-EU) से बाहर निकलना है।
- ब्रिटेन की जनता ने ब्रिटेन की पहचान, आजादी और संस्कृति को बनाए रखने के उद्देश्य से यूरोपीय संघ से बाहर जाने का फैसला लिया।
- यूरोपीय संघ (निकासी) विधेयक के कानून बन जाने के उपरांत इसने 2017 के यूरोपीय समुदाय अधिनियम का स्थान ले लिया है।
- यूरोपीय यूनियन से ब्रिटेन के अलग होने के समझौते के लिये तैयार मसौदे को ब्रेक्जिट ड्राफ्ट डील कहा जा रहा है।

ऐसा क्यों कहा जा रहा है कि चुनाव ब्रेक्जिट से अधिक प्रेरित था?

ऐसा इसलिए क्योंकि इसी मुद्दे पर चुनाव जीते गये हैं। इस चुनाव के परिणाम को समझना बहुत ही सरल है क्योंकि ब्रिटेन में अधिकांश मतदाताओं ने ब्रेक्जिट के मुद्दे पर ही अपना मत दिया है। इस चुनाव में ब्रेक्जिट अनिवार्य बन गया था, लेकिन सवाल यह था कि दोनों पार्टियों में से किसके पास इस मुद्दे को हल करने की बेहतर योजना है। इस पर, जॉनसन की कंजर्वेटिव पार्टी के पास लेबर पार्टी की तुलना में अधिक स्पष्ट योजना थी।

चुनाव प्रचार करते समय, जॉनसन ने न केवल लंबे समय से लंबित मुद्दे को हल करने का वादा किया, बल्कि विपक्ष को इस प्रस्ताव को विलंबित रखने के रूप में भी पेश किया। वास्तव में, लेबर पार्टी का रुख भी इस मुद्दे पर विरोधाभासी रहा। कॉर्बिन का व्यक्तिगत रूप से ब्रेक्जिट की ओर झुकाव है, लेकिन लेबर गठबंधन में कई लोग इसका विरोध करते रहे हैं। लेबर पार्टी के अभियान ने एक संशोधित ब्रेक्जिट योजना के बारे में बात की, लेकिन एक और राष्ट्रीय जनमत संग्रह के माध्यम से इसे अपनाने का प्रस्ताव किया।

तो, अब ब्रेक्जिट कैसे आगे बढ़ेगा?

अब तक, संसद में पेश की गई किसी भी योजना को बहुमत के साथ समर्थन हासिल नहीं हुआ था। लेकिन अब, बड़ी बहुमत से मिली इस जीत के कारण, जॉनसन की योजना को ब्रेक्जिट पर समर्थन मिलने की संभावना है। इसके अलावा, वोट को संभवत: जॉनसन की योजना के लिए सार्वजनिक समर्थन के रूप में व्याख्या किया जा सकता है, हालाँकि वास्तव में ऐसा नहीं है। अगले शुक्रवार को संसद में बैठक होने के कारण, इस महीने में ही जॉनसन के विदड्रॉअल एग्रीमेंट बिल पास करने की कोशिश की जाएगी। उसके बाद, ब्रिटेन को यूरोपीय संघ के साथ अपने समय-सीमा सहित एक संधि की शर्तों पर बातचीत करनी होगी। 'ब्रेक्जिट दिवस' 31 जनवरी को है, लेकिन कार्यान्वयन की प्रक्रिया उसके बाद लंबे समय तक जारी रहेगी।

स्कॉटिश नेशनल पार्टी के प्रदर्शन के क्या निहितार्थ हैं?

सबसे पहला, यह उम्मीद करना जल्दबाजी होगा कि एसएनपी का प्रदर्शन आखिरकार स्कॉटिश स्वतंत्रता को जन्म देगा। फिर भी, स्कॉटलैंड में एसएनपी की बड़ी जीत काफी महत्त्वपूर्ण है, यह दोनों लेबर पार्टी और कंजर्वेटिव पार्टी के लिए कई रास्तों को बंद करती है।

2014 में एक जनमत संग्रह में, स्कॉटलैंड ने स्वतंत्रता को अस्वीकार कर दिया था। लेकिन जनमत सर्वेक्षणों से यह भी पता चला है कि स्कॉटिश आबादी यूरोपीय संघ में रहने के पक्ष में है। हालाँकि एसएनपी ब्रेक्जिट के खिलाफ है और एसएनपी लेबर या कंजर्वेटिव पार्टी की तुलना में स्कॉटिश मतदाताओं के लिए अधिक लोकप्रिय है।

भले ही ब्रेक्जिट स्वतंत्रता-समर्थक भावना को पुनर्जीवित करता है (जो कि एसएनपी को आगे बढ़ाने में मदद् करेगा), स्वतंत्रता कई प्रक्रियात्मक बाधाओं के साथ एक लंबी सड़क है।

ब्रेक्जिट से परे, ब्रिटेन के लिए परिणाम का क्या मतलब है?

जीत का आकार जॉनसन की वैचारिक दृष्टिकोण - राष्ट्रवाद, आव्रजन पर सख्त कानूनों के साथ- ब्रिटेन के लिए मंच निर्धारित करता है। ब्रिटेन को भी अपनी अर्थव्यवस्था पर ब्रेक्जिट के प्रभाव से निपटना होगा। इसमें कई अन्य देशों के साथ नए द्विपक्षीय व्यापार समझौतों की लंबी प्रक्रिया शामिल है।

विशेष रूप से लेबर और कॉर्बिन के लिए इसका क्या मतलब है?

पार्टी के लिए, यह 1935 के बाद से लेबर पार्टी की सबसे बड़ी हार है, यहाँ तक कि मारग्रेट थैचर शासन के दौरान भी इतनी बड़ी हार नहीं हुई थी। हालाँकि, पार्टी के लिए वोट को कॉर्बिन के नुकसान के रूप में अधिक देखा जा रहा है।

हालाँकि राष्ट्रीय रेटिंग में कॉर्बिन को मतदाताओं के बीच अत्यधिक अलोकप्रिय होने के रूप में दिखाया गया है, उन्होंने उस पार्टी का नेतृत्व किया, जिनका विभिन्न गैर-ब्रेक्जिट मुद्दों पर विचार अलग-अलग थे। तथ्य यह है कि कॉर्बिन इस मुद्दे पर अपनी पकड़ बनाने में विफल रहे, जिसके कराण उन्हें चुनाव में हार का सामना करना पड़ा।

विभिन्न समाचार प्रकाशनों के विश्लेषण के अनुसार एक संभावित कारण यह है कि मतदाता अपने संबंधित वादों को पूरा करने के मामले में जॉनसन पर कॉर्बिन की तुलना में अधिक भरोसा करते थे, भले ही लेबर पार्टी की नीतियाँ समर्पित लेबर मतदाताओं के लिए अधिक लोकप्रिय थीं। कॉर्बिन को प्रो-ब्रेक्जिट के रूप में देखा जाता है जबकि अधिकांशत: लेबर वोटर्स इसके खिलाफ हैं।

बाहर निकलने की मांग क्यों?

1. सदस्यता शुल्क

- ईयू हर साल सदस्यता शुल्क के तौर पर ब्रिटेन से बिलियन ऑफ पाउंड लेता है तथा बदले में उसे बहुत कम राशि मिलती है।
- यह राशि लगभग 13 बिलियन पाउंड है, जो दूसरे देशों की अपेक्षा काफी अधिक है।
- सदस्यता के लिये ईयू के सभी 28 देश कुछ न कुछ राशि EU को देते हैं, लेकिन ब्रिटेन के लिये यह राशि काफी अधिक है और बदले में उसे सिर्फ 7 बिलियन यूरो वापस मिलते हैं। अत: UK (ब्रिटेन) को काफी नुकसान उठाना पड़ता है।

2. प्रशासनिक अड़चन

- UK में कोई भी प्रशासनिक कार्य करने के दौरान काफी अड़चनें आती हैं। बहुत अधिक डॉक्यूमेंटेशन तथा बहुत सारे कार्यालयों द्वारा काम होता है। कई सारी प्रणालियाँ हैं, जिनको पूरा करना पड़ता है।
- तमाम ऐसे प्रतिबंध हैं, जिनसे UK के विकास में रुकावट आ रही है तथा यूरोपीय यूनियन UK को पीछे ढकेल रही है, उसे आगे बढ़ने से रोक रही है।

3. स्वायत्तता

- लोगों का कहना है कि ईयू इंग्लैंड को उसके अधिकारों और स्वयं कानून बनाने से वंचित कर रहा है। खासतौर से फिशरीज से संबंधित कानून।
- UK के चारों ओर फिशरीज इंडस्ट्री काफी विकसित है और इस उद्योग को लेकर नियम-विनियम ईयू के द्वारा बनाए जाते हैं।
- ईयू की संसद तय करती है कि UK के मछुआरे कितनी मात्रा में मछली पकड़ सकते हैं तथा एक्सपोर्ट रेट क्या रहेगा।

4. अर्थव्यवस्था

- अगर यूरोपीय यूनियन से UK अलग हो जाता है, तो वह अपने आपको फाइनेंसियल सुपर पॉवर बना सकता है क्योंकि लंदन को पहले से ही वित्तीय राजधानी कहा जाता है। वहाँ का वित्तीय बाजार दुनिया के बड़े बाजारों में से एक है।
- जबकि ईयू द्वारा UK को ऐसा करने से रोका जा रहा है।

5. इमीग्रेशन

- यह एक बड़ा मुद्दा है क्योंकि सीरिया में सिविल वार के चलते काफी संख्या में अप्रवासी भागकर यूरोप आ रहे हैं।
- इमीग्रेशन नीति भी ईयू तय करता है न कि UK, अगर वह ईयू से हट जाता है तो उसे अपनी खुद की इमीग्रेशन नीति तय करने का अधिकार होगा।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. ब्रेक्जिट के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

   1. यूनाइटेड किंगडम ने यूरोपीय संघ से बाहर निकलने का निर्णय लिया है, बाहर निकलने की यह प्रक्रिया ब्रेक्जिट के नाम से जानी जाने लगी है।
   2. यूरोपीय संघ (निकासी) विधेयक के कानून बन जाने के बाद इसने 2016 के यूरोपीय समुदाय अधिनियम का स्थान ले लिया है।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2

   (c) 1 और 2 दोनों (d) इसमें से कोई नहीं

Expected Questions (Prelims Exams)

1. **Consider the following statement in the context of Brexit.**

   1. The United Kingdom has decided to exit the European Union, this process of exit has come to be known as Brexit.
   2. t has replaced the European Communities Act of 2016 after the European Union (Exit) Bill has become law.

   Which of the above statements is/are correct?

   (a) Only 1 (b) Only 2

   (c) Both 2 and 3 (d) None of these

नोट : 14 दिसम्बर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (b) होगा।

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: बोरिस जॉनसन की ब्रिटेन में एकतरफा यह जीत ब्रेक्जिट के लिए एक स्पष्ट जनादेश को दर्शाती है। ऐसे में ब्रिटेन के समक्ष अब चुनाव उपरांत विद्यमान चुनौतियों का विश्लेषण कीजिये।

(250 शब्द)

Boris Johnson's unilateral victory in Britain reflects a clear mandate for Brexit. In such a situation, analyze the challenges before UK now after the elections.

(250 words)

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।